an>

Title: Need to improve power situation in Maharashtra State.

**श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल गांधी (अहमदनगर) :** बिजली संकट ने महाराष्ट्र को भी अपनी गिरफ्त में ले लिया है। निजी संयंत्रों के बंद होने से खड़े हुए इस संकट को कोयले की कमी ने और बढ़ा दिया है। सरकारी बिजली कंपनी महाजेनकों के संयंत्रों में कोयले का स्टॉक समाप्ति की ओर है। सूत्र दावा कर रहे हैं कि कोयले को बचाने के लिए उत्पादन को कम करने का अघोषित आदेश भी दिया गया है। उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार की ओर से तय किए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार ताप बिजली केंद्र में सात दिनों से अधिक का कोयला स्टॉक होने पर हालत को अतिसंवेदनशील माना जाता है। राज्य के कुल सात ताप बिजली केन्द्र अतिसंवेदनशील के कसौटी पर उतरे हैं। ताप बिजली केंद्रों के साथ-साथ पवन और हाइड्रो एनर्जी भी धोखा देने लगी है। कम बारिश की आशंका को देखते हुए राज्य सरकार ने कोयना परियोजना का पानी किसानों के लिए आरक्षित कर दिया है। इससे यहां 59 मेगावॉट का उत्पादन हो रहा है जबकि, क्षमता 1956 मेगावॉट है। इसी प्रकार हवा का रूख बदलने से पवन ऊर्जा उत्पादन 1600 मेगावॉट से घटकर 700 मेगावॉट रह गई है। इसी स्थिति पर काबू करके, राज्य के सूखे की स्थिति में कम से कम बिजली आपूर्ति सुचारू रूप से हो किसानों को राहत मिले, ऐसा कदम उठाया जाए।